वर्तमान समाज के संदर्भ में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रासांगिकता

हरप्रीत कौर
राजस्थान विश्वविद्यालय
प्रो. रजनी शर्मा
(पूर्व प्राचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय केशव विद्यापीठ, जामडोलो, जयपुर)

सारांशः–

प्रस्तुत लेख द्वारा वर्तमान समाज के जातिगत, धार्मिक, राजनीतिक आर्थिक रुप से हो रहे विघटन को उजागर करने का प्रयास किया गया है मानव द्वारा परस्पर बढ़ती ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य तथा संकीर्ण स्वार्थ व मनोवृत्तियों के लिए धर्म को आधार बनाया जा रहा है, जबकि सभी धर्म मानव को एकता व भाईचारे का संदेष देते हैं। भारत के विविधतापूर्ण समाज के लिए सिक्खों के धर्मग्रन्थ 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में संकलित वाणी में मानवीय समानता व सद्भावना का संदेष नीहित है जिस पर अमल करके वर्तमान समाज में धार्मिक संकीर्णता से बाहर निकलकर मानव चेतना में प्रेम, सहयोग, सहनषीलता, बंधुत्व तथा सौहाद्रता की भावना पैदा की जा सकती है।

भारतीय संस्कृति भले ही अपने विविध तत्वों से सम्पन्न रही हो परन्तु विभिन्न काल के चलते एक समय ऐसा भी आया जब इसी भारत भूमि पर सांस्कृतिक तत्व समाप्त होते गये। जिससे तथा कथित जातियों के आधार पर इस देष के लोग विभक्त हो गये। भारतीय संस्कृति विखण्डित होने लगी। स्थिति इतनी विकृत हो गई कि ब्राह्मण को ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रिय को भुजाओं, वैष्य को पेट से और शुद्र को पैरों से निर्मित हुआ माना गया और इसी धारणा के चलते भारतीय समाज में वर्गो, व्यवसायों व कार्यो का विभाजन हो गया। तब से अब तक देष धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ग, लिंग इत्यादि के रुप में विघटित होता चला जा रहा है।

स्वतन्त्रता के पश्चात संविधान में तथाकथित सम्पूर्ण देष में समानता की व्यवस्था की है किन्तु आज भी यह व्यवस्था पूर्ण रुप से व्यवहारिक नहीं की जा सकती। इसी कारण जातिगत रुप से तो भारतीय समाज का विघटन हो ही चुका था परन्तु वर्तमान में समाज धार्मिक रुप से, राजनीतिक रुप से तथा आर्थिक रुप से भी विघटित होता चला जा रहा है। यह भेद राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्याप्त हो चुका है। मनुष्य–मनुष्य के साथ प्राकृतिक भेदों के कारण लड़ रहा है जाति–पाँति, नस्ल भेद, रंग भेद इत्यादि के कारण मानव–मानव का शत्रु बन गया है। एक मानव अपने से भिन्न धर्म, जाति, नस्ल भेद, रंग विचार वाले व्यक्ति को सहन करने को तैयार नहीं है। मानव स्वभाव से इर्ष्यालु व असहिष्णु हो गया है।

मनुष्य अपने संकीर्ण स्वार्थो तथा मनोवृत्तियों के लिए धर्म को आधार बनाता है, धार्मिक अहम् इतना बढ़ चुका है कि सहनषीलता को त्याग कर धार्मिक जुनून के कारण अपने धर्मो को सर्वापरि व दूसरे के धर्म को तुच्छ मानने लगता है इसी के चलते वर्तमान में विष्व भर में धर्म के नाम पर हिंसा व्यापक स्तर पर बढ़ रही है आज इक्कीसवीं सदी में पहुँचने के बाद भी मानव विष्व स्तर पर आतंकवाद, गुटवाद, क्षेत्रवाद, अलगाववाद, जातिवाद इत्यादि समस्याओं से ग्रस्त हुआ पड़ा है मानव मूल्यों का ह्रास हो चुका है। चिन्ताजनक मुद्दा यह है कि ये मानववृत्ति की ही उपज है और मानव समाज के लिए खतरे की घंटी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी मानव स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व की बात को स्वीकारा है। यू.एन.ओ. जनरल असेम्बली ने 10 दिसम्बर 1946 को मानव अधिकारों के संदर्भ में एक प्रस्ताव पारित करते हुए सभी सदस्य देषों को कहा था कि वे अपने–अपने देषों और प्रभावधीन क्षेत्रों में वहाँ के शैक्षणिक और सामाजिक

संस्थानों में बिना किसी भेदभाव यह संदेष संचारित करे कि ।सस ीनउंद इमपदहे ंतम इवतद तिमम ंदक मुनंस पद कपहदपजल ंदक तपहीजेण जीमल ंतम मदकवूमक ूपजी तमेंवद ंदक बवदेबपमदबम ंदक ीवनसक ंबज जवूंतके ंतम ंदवजीमत पद ``चपतपज व िइतवजीमतीववकण

मनुष्य आज अपनी काबिलियत के साथ आष्चर्य जनक विकास कर चुका है। नील गगन की छाँव तले खुले आसमान में रहने वाला और कंद–मूल खाकर जीवन निर्वाह करने वाला मानव आज स्पेस युग में प्रवेष कर गया है परन्तु मनुष्य को यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिये कि प्रकृति की असीम देन सभी की सांझी है किसी एक सम्प्रदाय या क्षेत्र विषेष के लोगों की नहीं है प्रकृति ने सभी मनुष्यों को समान बनाया है फिर जाति वर्गो, नस्लो, रंगो का भेद क्यों? संसार के सभी मनुष्य समान हो और उनमें एकता व भाईचारा ही उनकी प्रथम आवष्यकता है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए मध्यकाल में गुरु ग्रन्थ साहिब की रचना की गई। यह ग्रन्थ अपने आप में विविधता में एकता का प्रतीक है। यह एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमे बारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के 36 वाणीकारों की वाणी संकलित है। यह किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर विभिन्न धर्मा, प्रांतो व क्षेत्रों तथा विभिन्न जातियों के संतो की वाणी का संकलन है इस संकलन में विभिन्न भाषाओं (फारसी, अरबी, संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, राजस्थान, भोजपुरी आदि) की शब्दावली का प्रयोग किया गया है परन्तु यह शब्दावली ऐसी है जो साधारण बोलचाल की भाषा में पाई जाती है।

इन विविधताओं को इस ग्रन्थ में संकलित करने का मुख्य कारण यही है कि तत्कालीन समाज में धर्म, वर्ण, श्रेणी और भूखण्ड के आधार पर परस्पर विरोधी रुचियों, घृणा और व्यर्थ के कर्मकाण्डों के कारण समाज में व्याप्त शक्तियों को चुनौती दी जा सके। गुरु ग्रन्थ साहिब में एक ऐसी विलक्षण सभ्यता का सृजन किया गया है जिसमें मानवीय समता का संदेष नीहित है यह हर समय व स्थान पर समान रुप से महत्वपूर्ण व शाष्वत् है। इसके अनुसार यद्यपि मनुष्य के धार्मिक विष्वास भिन्न–भिन्न है किन्तु सभी का मूलाधार एक है अतः निम्न पंक्तियाँ इस ग्रन्थ में नीहित अनेकता में एकता का अद्वितीय उदाहरण है–

- *सभ महि जोति जोति है सोई*
  तिस कै चानणि सभ महि चानणु होई
- *ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई।*
- *अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे*
  एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।
- *एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जाति सवाईआ।*

गुरु ग्रन्थ साहिब में एक ऐसी विचारधार का निर्माण किया जिसमें कोई ऊँचा या नीचा नहीं है। सिक्ख गुरुओं द्वारा चलाई गई संगत व पंगत की रीति ने व्यवहारिक रुप से ऊँच नीच के भेद को मिटाया इस बात की घोषणा निम्न पंक्तियों द्वारा होती है जिससे पता चलता है कि मध्यकालीन संतो व गुरुओं के प्रयत्न से सभी वर्ण एक हो चुके थे–

चारे पैर धरम्म दे चारे वरनि इकु वरनु कराइआ

गुरु नानक एक महापुरुष थे और वे स्वभाव से विनम्र थे यह विनम्रता का भाव इन पंक्तियों द्वारा प्रदर्षित होता है जिसमें उनहोने स्वयं को नीच से भी नीच माना और समाज द्वारा दुत्कारे गये वर्ग की पीड़ा को उनके साथी बनकर महसूस किया–

- *नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।*
  नानक तिन कै रंगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस।।
- *सभु को ऊँचा आखीए नीचु न दीसै कोई।*

इकनै भांडे साजिए कड्डु चानणु तिह लोई।।

तत्कालीन समाज में हिन्दुओं व मुसलमानो में द्वेष व ईर्ष्या की भावना बलवती हो चुकी थी गुरुवाणी ने जाति पाँति के भेदभाव के विरुद्ध तो जेहाद छेड़ ही दिया था इस वाणी ने बाहरी दिखावे को एक ओर करके एकता की भावना का संदेष भी दिया–

- *ना हम हिन्दु न मुसलमान*
  अलह राम के पिंडु परान
- *हिन्दू तुरक कहा ते आये*
  किनि एक राह चलाई
  दिल महि सोचि विचारि कवादे
  भिसक दोजक किनि पाई।

गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित वाणी का मुख्य उद्येष्य मानव कल्याण है– इसमे आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि अनके समस्याओं से ग्रसित समाज के कल्याण के लिए प्रार्थना की गई है और कहा गया है कि हे प्रभु! जगत का कल्याण करो, चाहे किसी भी तरह से करो–

जगत जलंदा रखि लै
आपणी किरपा धारि।
जितु दुआरै उबरै तिते लेहु उबारि।
सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि।
नानक अवरु न सुझई हरि बिन बखसण हार।।

वास्तव में गुरु ग्रन्थ साहिब में साम्प्रदायिका घृणा व मानव मन में भेद उत्पन्न करनेवाले तत्वों को सर्वथा अस्वीकार करते हुए हर धर्म की आधारषिला को सत्य माना है और सच्चा धर्म सदैव मानवता की सेवा और उसका कल्याण ही बताया गया है–

- एकौ धरमु द्रिड़ै सचु कोई
  गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई।।
  गुरुवाणी में स्पष्ट है कि दूसरों के अवगुण देखने के बजाये उनके गुणों को सीखना बुद्धिमता है–
- साझ करीजै गुणह केरी छोड़ि अवगुण चलीए।
- *फरीदा बुरा दा भला करि गुसा मन न हढ़ाई।*
  इसी संदर्भ में गुरु अर्जुन देव का कथन है कि
  दुख न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ।

गुरु ग्रन्थ साहिब में जाति पाँति और धर्म के भेद भाव से ऊपर उठकर चिन्तन सत्य में एक ही नाद गुंजायमान है यह आलौकिक नाद है– ''एक पिता एकस के हम बारिक।'' निष्कर्षतः हम यह कह सकते है कि जब सब मनुष्य एक निर्गुण की संतान है तो मानव–मानव में परस्पर भेदभाव निर्मूल है यह ऊँच–नीच, जाति–पाँति लिंग भेद के आधार पर द्वेष एंव तिरस्कार करना उस सृष्टि रचयिता परम पिता परमेष्वर को कैसे सुहाते होंगे? एक ओर हम उसकी दया, करुणा व कृपा के इच्छुक हैं और दूसरी ओर हम उस प्रभु की सृष्टि में अपनी घृणा व वैमनस्य जैसे विष घोल रहे हैं।

गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणि की यह मान्यता है कि यदि कोई धर्म श्रेष्ठ है तो वो है उस प्रभु, अल्लाह या ईष्वर के नाम का स्मरण व निर्मल कर्म। यदि कोई हिन्दु है तो वह सच्चा हिन्दु बने और यदि कोई मुस्लिम है तो वह सच्चा मुसलमान बने।

- *चहु वरना कउ दे उपदेषु*
  नानक उस पंडित कउ सदा अदेसु।
- *सो मुलां जो मन सिउ लरै*
  गुर उपदेसि काल सिउ जुरै।

मनुष्य के कर्म ही उसे ऊपर उठाते है और उसके कर्म ही उसके विनाष का कारण बनते है मानव सेवा ही ईष्वर सेवा है और यह सेवा निष्काम भाव से करनी चाहिये–

- *सेवा करत होई निहकामी।*
  तिस को होत परापति सुआमी।।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एकता व सद्भावना को दृढ़ करने के लिए गुरुओं के क्रियात्मक कदम उठाये। उनकी वाणी में स्थान–स्थान पर मानव एकता, प्रेम, समानता और भाईचारे पर बल दिया गया हैः

सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ।।

वह परमात्मा एक है। लोग उसे विभिन्न नामों से पुकारते है–

- *कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ।।*
  कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि।।

कोई राम कहे या रहीम कहे मतलब तो उस 'एक' ईष्वर से ही है। मन्दिर और मस्जिद एक है। हिन्दु–पूजा तथा मुस्लिम–नमाज एक है सभी इंसान एक है। सम्पूर्ण मनुष्यता एक है। भ्रम के कारण प्राणी अलग–अलग दिखाई देते है।

- *''मानव की जात सभै एकै पहिचानबो।''*

इस प्रकार हम देखते है कि मनवता और एकता का संदेष देने वाला श्री गुरु ग्रन्थ साहिब प्रचलित धर्मो का सांझा धार्मिक ग्रन्थ है इससे धार्मिक पक्षपात संकीर्णता एंव साम्प्रदायि का कोई स्थान नहीं है। अतः आज समूचे विष्व में बंधुत्व की भावना को दृढ़ करने की आवष्यकता है। एक ऐसी व्यापक विष्व विचारधारा को अपनाया जाये जो कि न सिर्फ धर्म आधारित भेदभाव, संकीर्ण राष्ट्रवादी सोच, रंग–नस्ल–लिंग भेद, आर्थिक असंतुलन व राजनीतिक भेद का निषेध करे बल्कि सभी धर्मा, राष्ट्रो, रंगो, नस्लो के मनुष्य को स्वीकार करके आर्थिक समानता व स्वतन्त्रता को समर्पित समाज की स्थापना कर सके। गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी द्वारा एक ऐसी जीवन शैली कानिर्माण मानव समाज में किया जा सकता है जो प्रत्येक मनुष्य की आवष्यकता को पूरा करने में समर्थ है और जिसके द्वारा मनुष्य धार्मिक संकीर्णता के दायरे से बाहर निकल कर मानव चेतना में सहनषीलता व अमन–षान्ति पैदा करेगी।

संदर्भ–

कौर, जगजीत (1990), माणिक मोती–भाग–1, नई दिल्लीः हरमन पब्लिषंग हाउस

साबर, डॉ. जसबीर सिंह (2008 मार्च)ः विष्व मानव जीवन के प्रेरणा स्त्रोतः श्री गुरु ग्रन्थ साहिब. गुरमति ज्ञान

सिंह, एस. (2009) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब. अमृतसरः भाई चतुर सिंह जीवन सिंह प्रकाषक

सिंह, सं. गुरबख्श सिंह (2008 नवम्बर)ः मानवता के पथ प्रदर्षक श्री गुरु ग्रन्थ नानक देव जी एंव उनका मिषन. गुरमति ज्ञान।